चितवनि मार्गदर्शन

लेखक
श्री राजन स्वामी

चितवनि मार्गदर्शन

अपने आसन के आधे भाग पर बैठकर बिना जीभ या होंठ हिलाये तारतम का मौन जप कीजिए। किसी अभ्यस्त आसन (पद्मासन, सुखासन, स्वास्तिकासन, आदि) पर इस तरह से बिना हिले–डुले बैठिये कि आप अपने पञ्चभौतिक तन को भूल जायें तथा अपना आत्मिक स्वरूप परआतम जैसा (श्री श्यामा जी जैसा) ही मानिये, क्योंकि आत्मा परआतम का प्रतिबिम्ब है।

तारतम जप के साथ सद्गुरु (किसी ब्रह्ममुनि जिससे तारतम लिया हो) या गुम्मट जी की सेवा का ध्यान कीजिए। थोड़ी देर में आभास होगा कि अक्षरातीत श्री राज जी का जोश स्वयं या सद्गुरु रूप में आपके आगे आकर विराजमान हो गया है। सद्गुरु के उस स्वरूप को प्रणाम करते हुए अपनी आत्मा से परमधाम की तरफ

चलिए। गुम्मट जी की सेवा का ध्यान करने वाले को अपने आगे हकी स्वरूप श्री प्राणनाथ जी का भाव लेकर प्रणाम करना चाहिए।

इसके पश्चात् अष्टावरण युक्त चौदह लोक, सात स्वरों वाले शून्य को पार करते हुए, आदिनारायण को देखते हुए, मेरी आत्मा ने मोह सागर (महाशून्य) के घने अन्धकार में प्रवेश किया।

क्षर पुरुष

ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं
प्राहुरव्ययम्।
छन्दांसि यस्य पर्णानि
यस्तं वेद स वेदवित्।।
गीता 15/1

तस्मान्नारायणो जज्ञे स एव प्रणवात्मिकः।
हिरण्य गर्भमपि तं प्रवदन्ति मनीषिणः।। माहेश्वर तंत्र 20/27
तस्मिन्निर्मोहजल धावशेत पुरुषो महान।
तस्माद्देवा समुत्पश्यी भूत्वा नारायणः स्वयम्।
पंचावयव संयुक्तः स एव प्रणवात्मिकः।। पु. सं. 24/28, 29

मोह सागर, महामाया, महाशून्य, (समष्टि)

कारण में सात स्वरों वाला शून्य (व्यष्टि)

कारण प्रकृति

महाकाश मण्डल — व्यष्टि आकाश
महादिशा मण्डल — व्यष्टि दिशा
महाकाल मण्डल — व्यष्टि काल
महासत्व मण्डल, महारजस मण्डल, महातामस मण्डल — तीनों से

समष्टि अहंकार | समष्टि मनोमण्डल | समष्टि ज्ञानेन्द्रिय | समष्टि कर्मेन्द्रिय

समष्टि तन्मात्रायें

- समष्टि शब्द तन्मात्रा मण्डल — व्यष्टि आकाश तन्मात्रा, आकाश महाभूत
- समष्टि स्पर्श तन्मात्रा मण्डल — व्यष्टि स्पर्श तन्मात्रा, वायु महाभूत
- समष्टि रूप तन्मात्रा मण्डल — व्यष्टि रूप तन्मात्रा, अग्नि महाभूत
- समष्टि रस तन्मात्रा मण्डल — व्यष्टि रस तन्मात्रा, जल महाभूत
- समष्टि गन्ध तन्मात्रा मण्डल — व्यष्टि गन्ध तन्मात्रा, पृथ्वी महाभूत

तन्मात्रा और महाभूत से →

असंख्य आकाशगंगाएं

→ एक आकाशगंगा

दृश्यमान जगत में लगभग 5 खरब आकाशगंगायें हैं, हमारी इस आकाशगंगा में 3 खरब तारे हैं, जिनमें से डेढ़ खरब सूर्य जैसे हैं और 20 करोड़ पृथ्वी जैसे ग्रह हैं, जिनमें से लगभग 10 लाख ग्रहों में बुद्धिजीवी मानव निवास करते हैं

सात सागर :-
1.हिन्द महासागर 2.प्रशांत महासागर
3.अंध महासागर 4.उत्तर हिम महासागर
5.दक्षिण हिम महासागर 6.अरब सागर
7.भूमध्य सागर
इन सातों सागरों के किनारे के स्थल भाग ही सात पाताल लोक कहलाते हैं।
द्रष्टव्य :- पृथ्वी पर दूध, दही, घी, शहद तथा मदिरा का कोई भी सागर नहीं है।

विशेष :- 84 लाख योनियों को ही 84 नर्क के कुण्ड कहा गया है। सभी भोग मयी योनियों को "अपि च सप्त" वेदान्त दर्शन 3/1/15 के अनुसार सात भागों में बांटा गया है।
1. रौरव 2. महारौरव 3. वह्नि
4. वैतरणी 5. कुम्भिपाक
6. तामिस्र 7. अंधतामिस्र

सत्यलोक
तपलोक
जनलोक
महर्लोक
स्वर्गलोक
भुवर्लोक

भुवर्लोक अन्तरिक्ष लोक है, जिसके अंतर्गत सभी नक्षत्र आदि विद्यमान हैं। इसी अंतरिक्ष में पांच सूक्ष्म लोक (स्वर्गलोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक तथा सत्यलोक) हैं, जो क्रमशः एक दूसरे की अपेक्षा अधिक सूक्ष्म और सात्विक होते गये हैं। स्वर्ग लोक तथा महर्लोक में सूक्ष्म शरीरधारी वे योगी निवास करते हैं, जो वितर्क एवं विचारानुगत समाधि को प्राप्त कर चुके हैं, इसी प्रकार आनन्दानुगत तथा अस्मितानुगत समाधि की प्रारम्भिक अवस्था वाले योगी शेष तीनों लोकों (जन, तप और सत्यलोक) में निवास करते हुए सुख प्राप्त करते हैं।
अंतरिक्ष लोक में स्थित सभी ग्रह नक्षत्र स्थूल होने से पृथ्वी लोक के अंतर्गत ही माने जायेंगे। पंच भूतात्मक होने से पृथ्वी को पांच आवरणों से युक्त कहा गया है। शेष (भुवर्लोक, स्व, मह, जन, तप तथा सत्य) लोकों के ऊपर मात्र मन, बुद्धि और अहंकार का आवरण है। इन्हें ही अष्टावरण चौदह लोक कहा जाता है। जन तप तथा सत्यलोक के ऊपर पृथ्वी आदि का आवरण नहीं माना जा सकता।

प्रकृति रूपी वृक्ष पर समान अवस्था के दो पक्षी जीव तथा ईश्वर (आदि नारायण-जी) विद्यमान हैं। एक कर्म फल का भोग करता है। और दूसरा द्रष्टा होकर देखता रहता है।

प्रकाशक :-
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ सरसावा
नकुड़ रोड, जिला सहारनपुर
उत्तर प्रदेश, पिन 247232
फोन: 01331246000
email: shriprannathgyanpeeth@gmail.com
web: shriprannathgyanpeeth.org

मोह सागर को पार करते हुए अब मेरी आत्मा सद्गुरु महाराज के साथ योगमाया (बेहद, अक्षर ब्रह्म की भूमिका) के चेतन ब्रह्माण्ड में प्रवेश कर रही है, जहाँ कण–कण में करोड़ों सूर्यों की आभा है। अव्याकृत में मैंने प्रणव ॐ सुमंगला पुरुष को देखा।

अव्याकृत ब्रह्म

अक्षर ब्रह्म के मन स्वरूप

श्रीकृष्णजी के बाल स्वरूप के अराधकों का स्थान

छठवीं बहिश्त मलकूती

अव्याकृत के सूक्ष्म में काल निरंजन

पैगम्बरों मिस्त तीसरी, जिनो दिए हक पैगाम।
चौथी मिस्त जो होएसी, पावे खलक जो आम।।

पर प्रणव ब्रह्म
ज्ञानमय कोश

ज्योतिर्मय निर्गुणरूप

अव्याकृत के स्थूल में वेद

अपर प्रणव ब्रह्म
अज्ञानमय कोश

मन स्वरूप
रोधिनी शक्ति

अव्याकृत को देखते हुए मेरी आत्मा सबलिक ब्रह्म में पहुँची, जहाँ चिदानन्द लहरी पुरुष को देखा। इसके आगे अखण्ड व्रज है, जहाँ यमुना जी के किनारे बाल स्वरूप श्री कृष्ण जी ग्वाल–बालों के साथ खेल रहे हैं। आगे अखण्ड महारास की लीला है, जहाँ रास बिहारी किशोर श्री कृष्ण सखियों के साथ महारास की लीला कर रहे हैं। पूर्णमासी का चन्द्रमा उगा हुआ है। देखते हुए आगे बढ़ी– सबलिक ब्रह्म का किशोर युगल स्वरूप दृष्टिगोचर हो रहा है। इसके आगे केवल ब्रह्म के किशोर युगल स्वरूप दिख रहे हैं।

केवल ब्रह्म
अक्षर ब्रह्म के बुद्धि के स्वरूप
सबलिक ब्रह्म
तीसरी बहिश्त
महंमदी
अक्षर ब्रह्म के चित्त के स्वरूप
सबलिक ब्रह्म के महाकारण में स्थित रासलीला
अखण्ड रास की चौथी बहिश्त
अखण्ड वृज की पांचवी बहिश्त
सबलिक ब्रह्म के सूक्ष्म में चिदानन्द लहरी

इसके आगे मैंने सत्स्वरूप के किशोर युगल स्वरूप को देखा। सत्स्वरूप में ही पहली व दूसरी बहिश्त में क्रमशः ब्रह्मसृष्टियों के जीव तथा ईश्वरी सृष्टि की कायमी होनी है। सद्गुरु का स्वरूप यहीं सत्स्वरूप तक ही जाएगा।

अक्षर ब्रह्म का सत्स्वरूप

इसके आगे अक्षरातीत श्री राज जी का प्रेम पाकर मेरी आत्मा ने अखण्ड परमधाम (दिव्य ब्रह्मपुर धाम) में प्रवेश किया। परमधाम की अलौकिक तेजमयी शोभा व सुन्दरता को देखते हुए मैंने क्रमशः सर्वरस सागर, बड़ी राँग, छोटी राँग, वन की नहरें, महावन, जवेरों की नहरें, और फिर बड़ो वन को पार किया। अब मैं यमुना जी के किनारे केल के पुल पर पहुँच गई। केल पुल की पाँच भोम हैं। केल पुल की पहली भोम से होते हुए मैंने यमुना जी को पार किया। बायें हाथ मुड़कर यमुना जी के किनारे वाली पाल पर मैं चलती जा रही हूँ। पाल पर आए हुए वृक्षों की डालियाँ जल के ऊपर लटक रही हैं। यमुना जी का जल दस धाराओं में बह रहा है। जल दूध से भी अधिक उजला और मिश्री से भी अधिक मीठा है। शीतल, मन्द, सुगन्धित हवा बह रही है। तीन घाटों की

शोभा को देखते हुए मैं अमृत वन के सामने पाट घाट पर पहुँची। पाट घाट अति सुन्दर दिख रहा है। मैंने पाट घाट पर यमुना जी में स्नान किया और फिर जल रौंस पर बनी दयोहरी में अँगना भाव का पूर्ण श्रृँगार किया।

परमधाम

अनादि दिव्य परमधाम
क्षीर सागर
दधि सागर
घृत सागर
नीर सागर
मधु सागर
नूर सागर
रस सागर
सर्वरस सागर

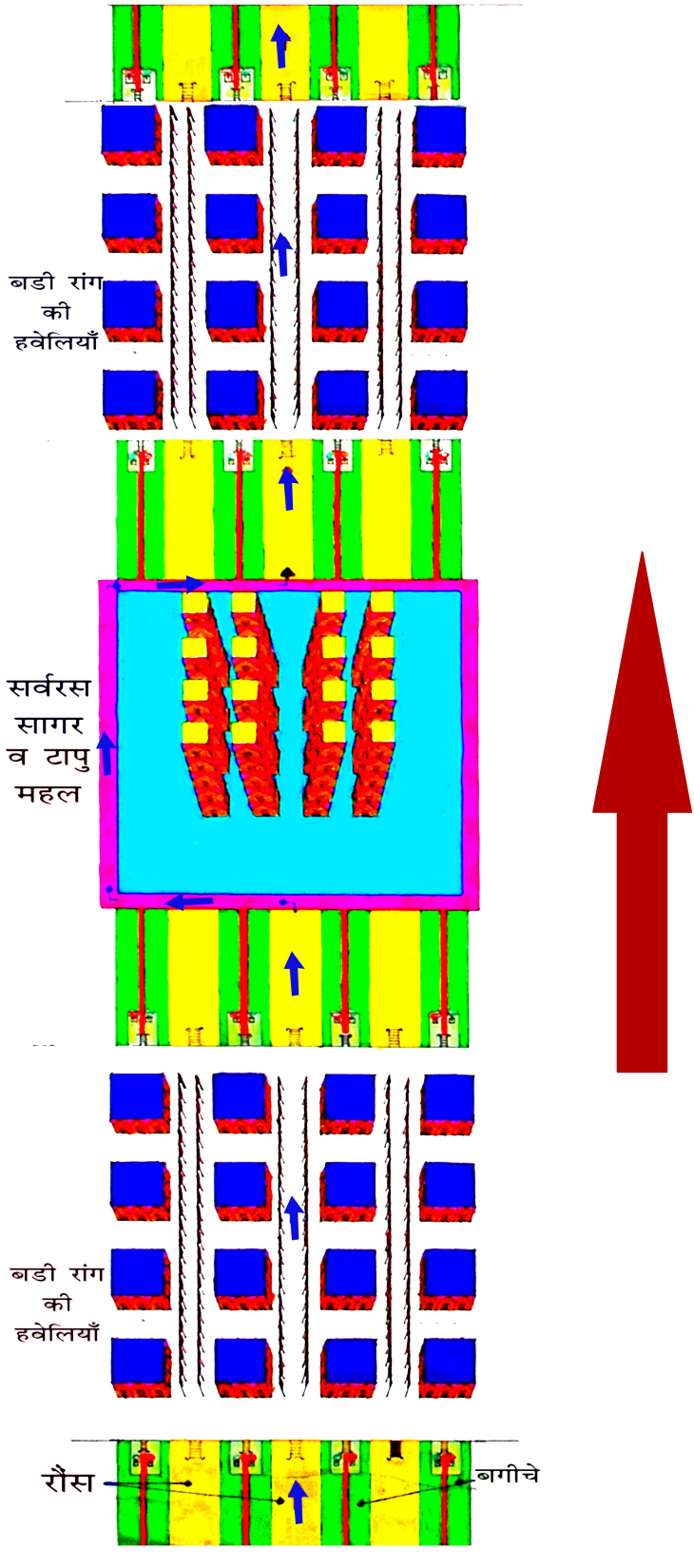
बडी रांग
की
हवेलियाँ
सर्वरस
सागर
व टापु
महल
बडी रांग
की
हवेलियाँ
रौंस
बगीचे

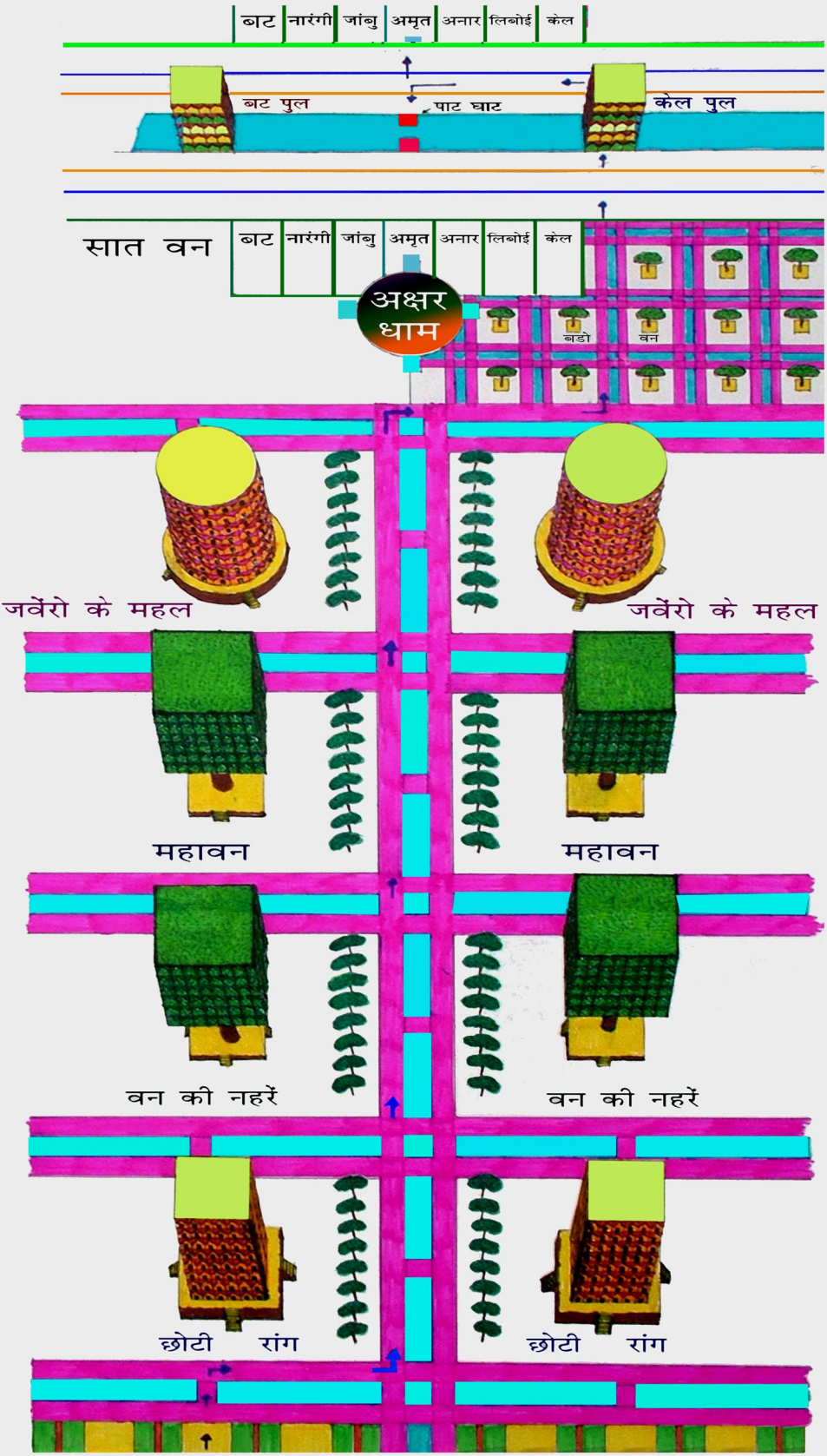
बट
नारंगी
जांबु
अमृत
अनार
लिबोई
केल
बट पुल
पाट घाट
केल पुल
सात वन
अक्षर धाम
बडो
वन
जवेंरो के महल
जवेंरो के महल
महावन
महावन
वन की नहरें
वन की नहरें
छोटी रांग
छोटी रांग

अब मैं अमृत वन को पार करके सीधे चाँदनी चौक में प्रवेश कर रही हूँ। चाँदनी चौक के कण–कण में करोड़ों सूर्यों के समान तेज है। चाँदनी चौक में दो चबूतरे आये हैं– दायें चबूतरे पर आम (लाल) तथा बायें चबूतरे पर अशोक (हरे) वृक्ष की शोभा है। सामने भोम भर ऊँचे चबूतरे पर नौ भोम दसवीं आकाशी का रंगमहल दिखायी दे रहा है। सौ सीढ़ियाँ चढ़कर मैं प्रथम भोम पर पहुँची। दर्पण रंग के पल्लों वाले मुख्य द्वार को पार करके मैं २८ थम्भों के चौक में पहुँची। इसके आगे चार चौरस हवेलियाँ हैं, जिन्हें पार करके मैं पाँचवीं हवेली में पहुँच गई जो गोल आकृति की है।

चांदनी चौक

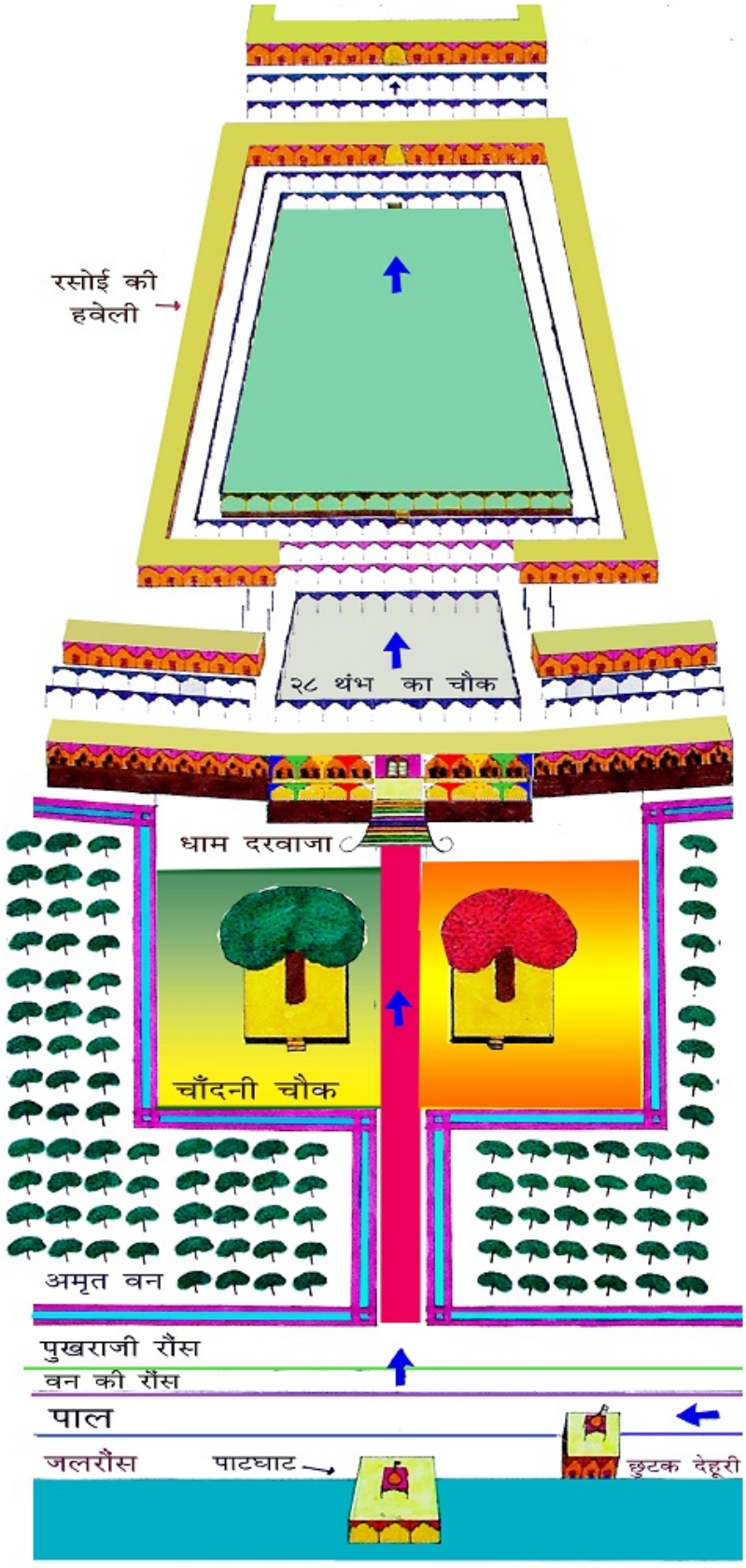
रसोई की
हवेली
२८ थंभ का चौक
धाम दरवाजा
चाँदनी चौक
अमृत वन
पुखराजी रौंस
वन की रौंस
पाल
जलरौंस
पाटघाट
छुटक देहूरी

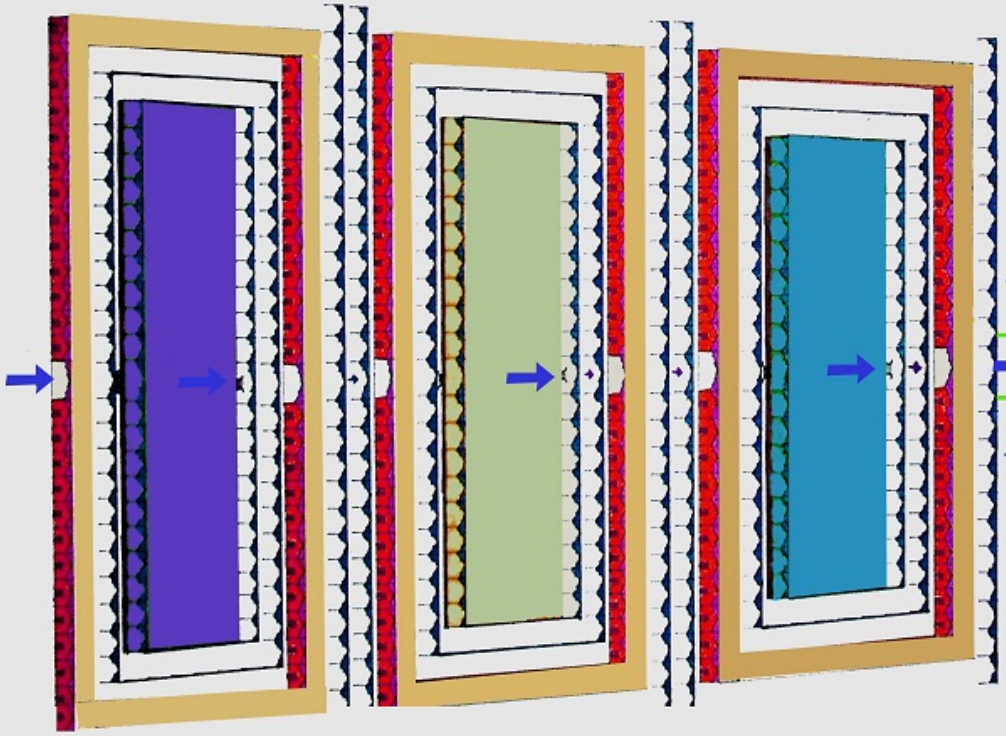

चौरस हवेलियाँ

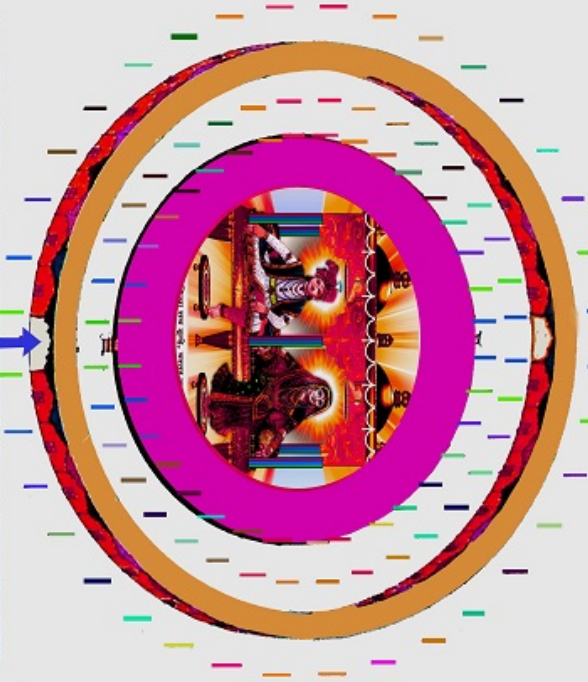

मूल मिलावा

मूल मिलावा की इस गोल हवेली के बाहरी तरफ गोलाई में ६४ थम्भों की हार दिख रही है। आगे ६० मन्दिरों की एक हार गोलाई में है। मन्दिरों की हार की चारों दिशाओं में चार मुख्य द्वारों की शोभा आयी है। पूर्व के द्वार से अन्दर प्रवेश करके मैंने ६४ थम्भों की दूसरी हार को पार किया। सामने कमर भर ऊँचा गोल चबूतरा है, जिसके किनार पर ६४ थम्भों की तीसरी हार आयी है। चबूतरे के चारों तरफ तीन–तीन सीढ़ियाँ आयी हैं। मैं पूर्व दिशा से सीढ़ियाँ चढ़कर चबूतरे के ऊपर पहुँची। चबूतरे पर अति सुन्दर गिलम बिछी है, जो इतनी कोमल है कि बैठने पर एक हाथ धँस जाती है। गिलम पर बेशुमार रंगों की चित्रकारी हुई है। गिलम के बीचोंबीच सहस्त्र (हजार) दल (पँखुड़ी) वाले कमल की आकृति है।

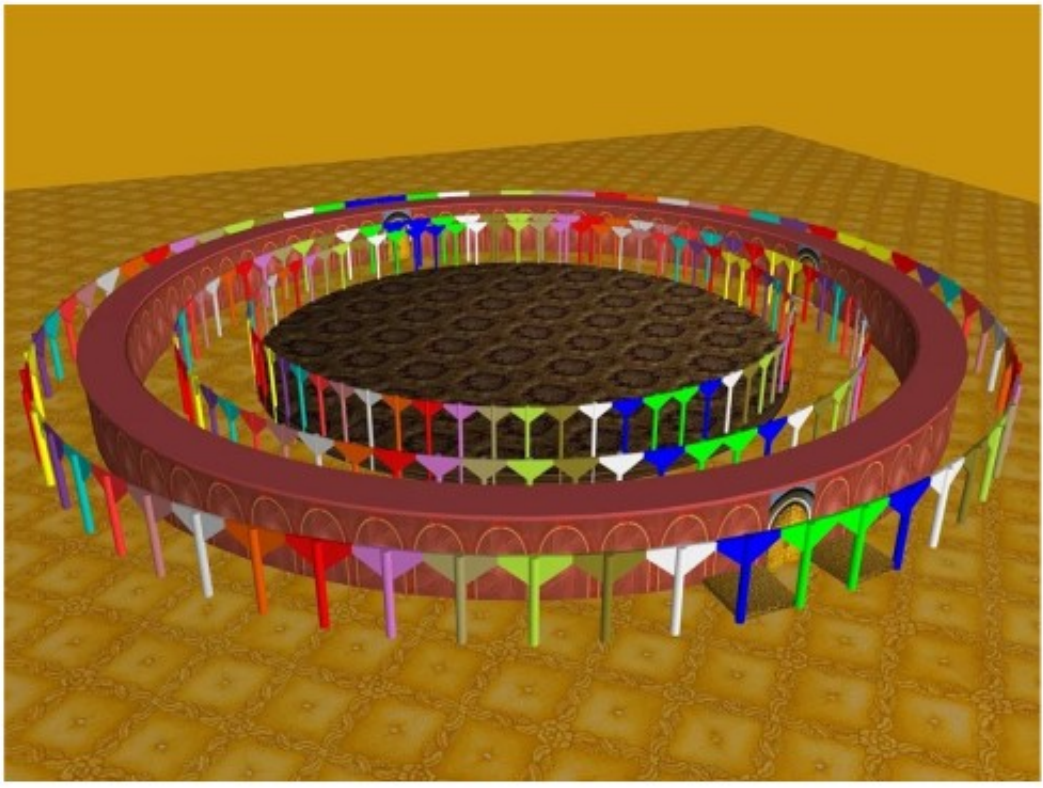

चबूतरे के बीचोंबीच कञ्चन रंग का छः पाये छः डाण्डों वाला सुन्दर सिंहासन सुशोभित है। अब मेरी नजर सिंहासन के दायें और मेरे बायें हाथ की ओर विराजमान श्री राज जी के चरणों की ओर जा रही है। श्री राज जी अपना बायाँ चरण कमल नूर की चौकी पर तथा दायाँ चरण कमल बायें चरण की जाँघ के मूल पर रखकर बैठे हैं। मैंने उनके बायें चरण कमल में अपने दोनों हाथों से कोमल स्पर्श किया। श्री राज जी ने अपना दूसरा चरण कमल भी मेरे हाथों में रख दिया। मैंने उनके दोनों चरण कमलों में प्रणाम किया और उनकी शोभा को देखने लगी। चरण कमल अति सुन्दर एवं फूल की पँखुड़ी से भी करोड़ों गुना अधिक कोमल और लालिमा लिए हुए हैं। दोनों चरण कमलों में झांझरी, घुंघरी, कांबी, और कड़ला के आभूषण जगमगा रहे हैं। दोनों चरणों के

नाखून लालिमा युक्त हैं। उनमें इतना तेज है कि करोड़ों सूर्यों का प्रकाश भी फीका पड़ जाये। मैं उनके चरण कमलों की शोभा को एकटक देखे जा रही हूँ।

अब मैं श्री राज जी के मुखारविन्द को देख रही हूँ। कितना सुन्दर, सलोना, कोमल मुखारविन्द है। आँखें प्रेम का सागर उड़ेलती हुई हैं, भौंहें अति सुन्दर हैं, मैं आँखों की शोभा को देखे जा रही हूँ। नासिका अति सुन्दर है, जिसकी आकृति सिंगाड़े जैसी है। नासिका में बेसर के लाल नग की ऐसी शोभा है कि हीरे जैसे दाँतों का रंग भी लाल दिखाई पड़ रहा है। होंठ पतले तथा गहरे गुलाबी रंग के अति सुन्दर हैं। ठुड्डी की भी अलौकिक शोभा है। गालों का रंग सफेदी (उज्ज्वलता) में गहरी लालिमा लिए हुए है। कानों की भी अति सुन्दर शोभा है, जिनमें जगमगाते हुए कुण्डल शोभा ले रहे हैं।

माथा अति सुन्दर है, जिसमें अत्यन्त सुन्दर कञ्चन रंग का तिलक सुशोभित है। सिर पर घुँघराले काले बालों की सुन्दरता मन को मुग्ध कर रही है। सिर पर सिन्दुरिया रंग की पाग बँधी है, जिस पर बेशुमार रंगों के नगों की शोभा है। पाग में दुगदुगी, कलंगी, तथा मोतियों की लड़ी की अद्भुत छवि है।

अब मैं नख से शिख तक श्री राज जी के वस्त्रों और आभूषणों की शोभा को देख रही हूँ। श्री राज जी के तन पर श्वेत रंग का जामा है, जिसकी सफेदी के समक्ष दूध से करोड़ों गुना सफेदी भी शर्मिन्दा होती है। जामे में बेशुमार रंगों के नग जड़े हुए हैं। केशरिया रंग की इजार है, जिसकी झलकार मन को मुग्ध कर रही है। काँधे पर आसमानी रंग की पिछौरी (चादर) ओढ़ रखी है। कमर में नीले–पीले (तोते के पंख जैसा) रंग का पटुका बाँध

रखा है, जिसके नगों की झलकार मन को अलौकिक प्रेम में डुबा रही है। प्रत्येक वस्त्र नूरी झलकार से युक्त शोभा ले रहा है।

श्री राज जी की गर्दन अति सुन्दर है, जिसमें होकर पाँच हार वक्ष स्थल पर जगमगा रहे हैं। ये पाँचों हार हीरा, माणिक, मोती, नीलवी, और लसनिया के हैं, जो शोभा में अद्वितीय हैं। सभी हारों में दुगदुगी की शोभा है। हर हार की शोभा एक–दूसरे से बढ़कर प्रतीत होती है, किन्तु सबकी शोभा समान है।

अब मेरी नजर श्री राज जी के हाथों की ओर जा रही है। दोनों बाहें अति सुन्दर और कोमल हैं। दोनों बाजुओं में बाजूबन्ध शोभायमान हैं, जिसमें फुम्मक लटक रहे हैं। दोनों कलाइयों में पोहोंची की शोभा है। अँगुलियां पतली, सुन्दर, और कोमल हैं। आठ अँगुलियों

में आठ मुँदरियों की शोभा है। हथेली लालिमा से भरपूर है, जिसकी बारीक रेखायें भी साफ नजर आ रही हैं। मैं श्री राज जी की नख से शिख तक की शोभा को एकटक देखे जा रही हूँ।

श्रीराजश्यामाजी का श्रृंगार

अब मैं अपने दाहिने हाथ और श्री राज जी के बायें हाथ की ओर विराजमान श्री श्यामा जी की ओर देख रही हूँ, जो अपने दोनों चरण कमल नूर की चौकी पर रखकर विराजमान हैं। मैंने उनके दोनों चरणों को अपने हाथों में लेकर प्रणाम किया।

दोनों एड़ियाँ गुलाब के फूल की पँखुड़ियों से भी करोड़ों गुना कोमल हैं। दोनों अँगूठों में अनवट और अँगुलियों में बिछिया की शोभा है। पैरों में झांझरी, घुंघरी, कांबी, और कड़ला की शोभा है। मैं श्यामा जी के दोनों चरण कमलों की शोभा को एकटक देखे जा रही हूँ।

अब मैं श्यामा जी के मुखारविन्द की शोभा को देख रही हूँ। कितना सुन्दर, सलोना मुखड़ा है! प्रेम भरे तिरछे नैन, काली भौंहें अति मुग्धकारी हैं। उज्ज्वलता में गहरी लालिमा लिये हुए मुखारविन्द की शोभा है। नासिका की

आकृति अति सुन्दर है, जिसमें मुरली की शोभा मुग्ध करने वाली है। दोनों होंठ पतले हैं और लालिमा से भरपूर हैं। दोनों गालों की खूबसूरती को मेरी नजर एकटक देखे जा रही है। दोनों कान अति सुन्दर हैं, जिनमें पानड़ी लटक रही है। हीरे के समान जगमगाते हुए दाँत मुस्कराते मुख में अति सुन्दर लग रहे हैं। गर्दन अति मोहनी एवं सुराहीदार है। बाल काले हैं जिनकी चोटी गूँथी है। सिन्दुरिया रंग की साड़ी का पल्ला माथे पर आया है। माथे पर पानड़ी तथा सिर पर राखड़ी की शोभा आयी है। मैं श्यामा जी के मुखारविन्द की शोभा को एकटक देखे जा रही हूँ।

अब मैं श्यामा जी के नख से शिख तक की शोभा एवं वस्त्राभूषणों को देख रही हूँ। हरे रंग का पेटीकोट है, जिसमें बेशुमार रंगों के नग जड़े हैं। सिन्दुरिया (लाल)

रंग की साड़ी है। श्याम रंग का ब्लाउज है। साड़ी एवं ब्लाउज में जड़े हुए नगों के अनन्त रंगों की किरणें पल–पल फैल रही हैं। श्यामा जी के गले में कण्ठसरी, हीरा, माणिक, मोती, नीलवी, लसनियाँ, और चम्पकली के सात हारों की शोभा आयी है। हर हार की शोभा अलौकिक है। सात हारों में नग–जड़े फुम्मक लटक रहे हैं। श्यामा जी की बाँहें अति सुन्दर, पतली, और कोमल हैं। अँगुलियों के नाखून लालिमा लिये हुए हीरे के समान चमक रहे हैं। अँगुलियां बहुत कोमल हैं। हथेली की कोमलता, लालिमा, और सुन्दरता आतम को मुग्ध कर रही है। आठ अँगुरियों में आठ मुँदरियां, बायें अँगूठे में कञ्चन का छल्ला, तथा दायें अँगूठे में हीरे की दर्पण–युक्त अँगूठी शोभा ले रही है। दोनों बाजुओं में बाजूबन्ध तथा कलाइयों में पोहोंची, नवघरी, नवचूड़, तथा कँगन शोभा

ले रहे हैं। मैं एकटक श्री श्यामा जी की शोभा को देखे जा रही हूँ।

अब मैं सिंहासन सहित युगल स्वरूप की शोभा को देख रही हूँ। कमल के फूल की आकृति पर छः पायों और छः डाँडों का अति सुन्दर कञ्चन रंग का सिंहासन है। एक–एक डाण्डे में जवेरों के दस–दस रंग झलक रहे हैं। छः डाण्डों के ऊपर छः कलश, दो छत्रियों के ऊपर दो कलश, कुल आठ कलश आये हैं। छत्री के ऊपर जवेरों की झालर लटक रही है। दोनों स्वरूपों के ऊपर की छत्रियों में माणिक के लाल रंग के फूल लटक रहे हैं। काँगरी की शोभा अलौकिक है। सिंहासन पर पशमी (मखमली) बिछौना है। एक गादी, दो चाकले, तथा लाल रंग के अति सुन्दर पाँच तकिये शोभा ले रहे हैं। दो तकिये युगल स्वरूप के दायें–बायें, एक बीच में, तथा दो

पीछे की तरफ आये हैं। तकियों के ऊपर चित्रकारी की बेशुमार शोभा है। सिंहासन के सामने नूर की दो चौकियाँ हैं, जिन पर युगल स्वरूप अपने चरण कमल रखकर विराजमान हैं। सिंहासन के ऊपर छत में हरे रंग का सुन्दर चन्द्रवा लटक रहा है। युगल स्वरूप के मुखारविन्द से लालिमा भरा इतना नूर निकल रहा है कि सम्पूर्ण सिंहासन का रंग ही कञ्चन (अति लाल) रंग का दिखायी पड़ रहा है। मैं बार–बार युगल स्वरूप की शोभा को देखे जा रही हूँ।

अब मैं सम्पूर्ण मिलावे की शोभा को देख रही हूँ। थम्भों के बीच में आये हुए कठेड़े से लगते हुए तकियों की शोभा अद्वितीय है। सभी सुन्दरसाथ गले में बाँहें डालकर इस तरह से सट–सट कर बैठे हैं कि अँगुली भी घुसाने की जगह नहीं है। सभी की शोभा श्यामा जी के समान

है। इनके बीच में मुझे अपनी परात्म भी दिख रही है। मैं एकटक युगल स्वरूप सहित मूल मिलावा की शोभा को देखे जा रही हूँ। इस अलौकिक सौन्दर्य को देखकर मेरी आत्मा आनन्द में डूब गयी।

अब मैं युगल स्वरूप को प्रणाम करके पीछे मुड़ी। चबूतरे के पूर्व से तीन सीढ़ियाँ नीचे उतरी। एक थम्भों की हार दो गली पार करके पूर्व के दरवाजे से बाहर निकली। क्रमशः चौथी, तीसरी, दूसरी, पहली चौरस हवेली को पार किया। २८ थम्भ के चौक को पार करके मुख्य दरवाजे से बाहर निकली। सौ सीढ़ियाँ उतरकर चाँदनी चौक व अमृत वन को पार किया, पाट घाट से अपनी बायें तरफ मुड़कर केल पुल पहुँच गयी। केल पुल को पार किया, फिर बड़ोवन को पार करके क्रमशः जवेरों की नहरें, महावन, वन की नेहरें, छोटी राँग, व बड़ी राँग

को पार किया। योगमाया के ब्रह्माण्ड में पहुँच गयी। क्रमशः सत्स्वरूप ब्रह्म, केवल ब्रह्म, सबलिक ब्रह्म, व अव्याकृत ब्रह्म को पार किया। क्षर ब्रह्माण्ड में पहुँच गयी। मोह तत्व, आदिनारायण, सात स्वरों वाले शून्य से होकर मृत्युलोक पहुँच गयी।

❖❖❖❖❖